International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-08-2020; Accepted: 05-09-2020; Published: 21-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 36-39

द्विवेदी युग में हिंदी नवजागरण

अनुभा कुमारी
आसु इनक्लेव, आरा गार्डेन रोड, पटना, बिहार, भारत

प्रस्तावना

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी का मूल्यांकन करने वाला उनकी विभिन्न रचनाओं का एक प्रतिनिधि संकलन का निर्माण और प्रकाशन हुआ है। इसे 'प्रतिनिधि संकलन' के रूप में नामकरण किया गया है, जिसमें उनकी विविध रचनाओं को ही संकलित किया गया है। इस संकलन का नाम है–''हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत : आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी''। इस संकलन के सम्पादक हैं– रामवृक्ष और नामवर सिंह । इस ग्रन्थ के प्रधान संपादक श्री नामवर सिंह हिन्दी नवजागरण पर अपने गणेषणात्मक विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं–''हिन्दी नवजागरण की चर्चा अँग्रेजी पढ़े–लिखे भारतीय बौद्धिकों के हलके में कम ही सुनाई पड़ती है, यहाँ तक कि कुछ लोग उसके अस्तित्व को भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। कारण शायद यह हो कि हिन्दी नवजागरण संबंधी अधिकांश रचनाएँ हिन्दी में ही हुई, अँग्रेजी में उन्हें सुलभ कराने के प्रयास भी बहुत कम ही हुए। विडम्बना तो यह है कि स्वयं हिन्दी जाननेवाले आधुनिक बौद्धिक भी अपनी इस समृद्ध विरासत से भली–भाँति परिचित नहीं हैं। अभी तक अधिकांश रचनाएँ पुरानी पत्रिकाओं और दुर्लभ पोथियों में छिपी पड़ी हैं, जो शोधकर्त्ताओं के लिए भी सहज सुलभ नहीं हैं। ''हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत'' पुस्तकमाला की योजना इसी आवश्यकता की पूर्त्ति की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।'' [1] इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता में 'नवजागरण संदेश' का विशेष महत्त्व है।

हिन्दी नवजागरण के आदि और आरंभ पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात समालोचक नामवर सिंह अपने 'संपादकीय वक्तव्य' के अन्तर्गत कहते हैं–''हिन्दी नवजागरण का बीज मंत्र फूँकने वाले प्रथम अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे, जिनकी मुख्य प्रतिज्ञा यह थी कि 'स्वत्व निज भारत गहै।'' भारतेन्दु का ''स्वत्व'' वही था जिसे आज ''जातीय अस्मिता'', ''जातीय पहचान'' और अँग्रेजी में ''आइडेंटी'' कहते हैं। भारतेन्दु के साथ–ही उस दौर के सभी हिन्दी लेखकों के लिए अपनी ''पहचान'' की पहली शर्त्त थी–अपनी भाषा– ''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल।'' इस आग्रह का कारण शायद यह था कि अन्य प्रदेशों में जहाँ फारसी के स्थान पर प्रादेशिक भाषाओं को कचहरी जैसे सरकारी दफ्तरों में मान्यता मिल गई थी,वहीं हिन्दी–केवल इस अधिकार से शताब्दी के अंतिम दशक तक वंचित रही। इस स्थिति में हिंदी नवजागरण के लेखकों को अँग्रेजी के साथ–साथ अपनी सगी बहन उर्दू के वर्चस्व के विरूद्ध भी संघर्ष करना पड़ा।'' इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी नवजागरण का शंखनाद अथवा बीज मंत्र की बोआई करने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही हैं। आगे अपने विवेचन को बढ़ाते हुए नामवर सिंह कहते हैं–''स्वभाषा के आग्रह की परिणति ''स्वदेशी'' में हुई जिसकी अभिव्यक्ति मिली अंग्रेजी राज्य की आर्थिक–औद्योगिक नीति के विरूद्ध स्वदेशी उद्योग धंधे के विकास पर बल देने में। उल्लेखनीय है कि भारतेन्दु के 'बलिया वाले व्याख्यान' से लेकर महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'संपत्तिशास्त्र' (1908) नामक ग्रंथ तक इस स्वदेशी विकास पर आग्रह दीखता है, जिसमें आर्थिक स्वाधीनता के साथ–साथ राजनीतिक स्वाधीनता की भी गूंज निहित है।'' [2] इस विवरण से भारतेन्दु और द्विवेदीजी दोनों के द्वारा नवजागरण का स्पष्टीकरण होता है और द्विवेदीजी के 'संपत्तिशास्त्र' नामक पुस्तक के द्वारा आर्थिक जागरण की स्थिति भी स्पष्ट होती है। प्रसिद्ध समीक्षक डॉ• नगेन्द्र ने 'द्विवेदी–युग' का एक नामकरण नये रूप में किया है–'जागरण–सुधार–काल।' इस तरह डॉ• नगेन्द्र ने 'हिन्दी नवजागरण' कह करके इसे 'जागरण–सुधार–काल' की संज्ञा से अभिहित किया है–''हिन्दी कविता को श्रृंगारिकता से राष्ट्रीयता, जड़ता से प्रगति तथा रूढि से. स्वच्छंदता के द्वार पर ला खड़ा करनेवाले बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों का सर्वाधिक महत्त्व है। इस काल–खण्ड के पथ–प्रदर्शक, विचारक और सर्व स्वीकृत साहित्य–नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम 'द्विवेदी–युग' उचित ही है। वैसे, इसे 'जागरण–सुधार–काल' भी कहा जाता है।

भारतीय इतिहास में यह समय ब्रिटिश शासन के दमन–चक्र और कूटनीति का काल है। सन् 1857 ई• के विद्रोह के पश्चात् 1858 में महारानी विक्टोरिया के सहृदयृतापूर्ण घोषणा–पत्र से भारतीय जनता आशान्वित हो गयी थी। कुछ सुधार हुए भी, अतएव भारतेन्दु कालीन कवियों ने अँग्रेजों की प्रशस्तियाँ लिखीं और राजराजेश्वरी विक्टोरिया का जय जयकार किया। किन्तु छोटे–मोटे सुधारों के अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ। प्रजा ने जो बड़ी–बड़ी आशाएं लगायी थीं, अपूर्ण रहीं। अनेक प्रतिगामी एवं काले कानून पास हुए जिनसे जनता पिसती चली गयी। फलतः जनता में असन्तोष और क्षोभ भी भड़कती चली गयी। आर्थिक दृष्टि से भी अँग्रेजों की नीति भारत के लिए अहितकर थी। यहाँ से कच्चा माल बाहर जाता था और वहाँ से बने माल की खपत भारत में होती थी। देश का धन निरन्तर बाहर जाने से भारत निर्धन हो गया। यहाँ उद्योग–धंधे के विकास की ओर सरकार का ध्यान ही नहीं गया। उपर से एक–पर–एक पड़ने वाले दुर्भिक्षों ने तो देशवासियों की कमर ही तोड़ दी। अत्याचारों एवं सर्वतोमुखी विफलता का मुख्य कारण परतन्त्रता ही समझ में आया। अतः जनता ने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। सौभाग्य से गोपालकृष्ण गोखले तथा बालगंगाधर तिलक–जैसे मेधावी एवं कर्मठ नेता मिल गये। 'स्वराज्य' एवं 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', की धूम मच गयी। भारतेन्दुकालीन साहित्यकार जहाँ भारत–दुर्दशा पर दुःख प्रकट करके रह गया था, वहाँ द्विवेदीकालीन कवि–मनीषियों ने देश की दुर्दशा के चित्रण के साथ–साथ देश वासियों को स्वतंत्रता–प्राप्ति की प्रेरणा भी दी–उन्हें आत्मोसर्ग एवं बलिदान का मार्ग भी दिखाया।'' [3] उपर्युक्त तथ्यपरक विवरण से यही निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आदि अनेक दृष्टियों से द्विवेदीजी ने देश में नवजागरण संदेश संचारित किया। यह संदेश पत्रकारिता के माध्यम से ही किया गया। डॉ• नगेन्द्र नवजागरण की प्रक्रिया के बारे में कहते हैं–''वैसे उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में

आर्य–समाज, ब्रह्म–समाज, थियोसोफिकल सोसायटी' तथा इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना के फलस्वरूप भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म और समाज के पुनरूत्थान की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी थी। आलोच्य काल में इसका और भी विकास और विवर्द्धन हुआ। बालगंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, मदनमोहन मालवीय आदि नेताओं और निःस्वार्थ समाज सेवियों ने देशवासियों के स्वाभिमान को जगाने तथा अपनी गौरव परम्पराओं के प्रति उन्हें निष्ठावान बनाने का सफल प्रयास किया।'' [4] ऊपर में जिन राजनेताओं तथा समाज–सुधारकों तथा देश–भक्तों का नाम आया है, उनमें से प्रायः सभी के सभी पत्रकार और साहित्यकार रहे हैं और द्विवेदीजी के समय में भी रहे हैं। तिलक और द्विवेदीजी का हमेशा सम्पर्क रहा है, पत्रकारिता के क्षेत्र में। इस तरह प्रायः सभी दृष्टिकोण से नवजागरण संदेश जन–मानस में संचारित करने का माध्यम पत्रकारिता ही रही है। इसमें भी आचार्य द्विवेदीजी की पत्रकारिता से तो प्रधान रूप से नवजागरण संदेश को बल मिलता ही रहा है। साथ–ही अन्य अनेक महान पत्रकारों को नवजागरण संदेश के लिए द्विवेदीजी प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहे हैं। हिन्दी नवजागरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के योगदान पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ• नंद किशोर नवल जी कहते हैं–''1977 ई• में हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ• शर्मा की शोधपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तक 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में पहली बार लेखक और संपादक के रूप में द्विवेदीजी के प्रदेय पर वस्तुपरक ढंग से विचार किया गया है। इससे डॉ• शर्मा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि द्विवेदीजी का असली महत्त्व इस बात से है कि उन्होंने हिन्दी भाषा क्षेत्र में उस आधुनिक विचारधारा का प्रसार किया, जिससे उनके अनुसार हिन्दी नवजागरण का पहला दौर है 1857 का स्वाधीनता–संग्राम और उसका दूसरा दौर है भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का युग। नवजागरण के तीसरे दौर में पुरानी व्यवस्था को बदलने की मांग अधिक उग्र और व्यापक हो गई। द्विवेदीजी ने समाज और संस्कृति दोनों की ही समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण कर हिन्दी–भाषी जनता को स्वाधीनता–प्राप्ति की दिशा में तेजी से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनका उद्देश्य था सामंती और औपनिवेशिक व्यवस्था को समाप्त कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जनवादी व्यवस्था कायम करना। उनका भाषा–संशोधन का काम नये युग की भाषा खड़ी बोली के प्रतिमानीकरण से संबंधित था। इस तरह यह नवजागरण के कार्यक्रम का ही एक अंग था, लेकिन जैसा कि कहा जा रहा है, यह उनका सर्वप्रमुख कार्य नहीं था।'' [5]

डॉ• नंद किशोर नवलजी ने उपर्युक्त विवेचन में डॉ• रामविलास शर्मा के विचार की चर्चा करते हुए द्विवेदी जी के योगदान को नवजागरण से जोड़कर भी देखा है और अलग करके भी। अब हम डॉ• राम विलास शर्मा के विचार को प्रत्यक्ष रूप से उद्धृत करके हिंदी नवजागरण के संबंध में अध्ययन करते हैं–''पाठक विचार करें कि हिन्दी नवजागरण पर–जिसके एक सूत्रधार महावीर प्रसाद द्विवेदी थे– इंग्लैंड का अधिक प्रभाव पड़ा है या जापान का। भारतीय नवजागरण पर लिखने वाले शोधकर्त्ता, अध्यापक और राजनीतिज्ञ द्वारा अँग्रेजी और उससे भारतीय स्वाधीनता का प्रश्न इस तरह जोड़ा गया, जैसे इस लेख में जापान की जीत के कारणों का विश्लेषण करते हुए, भारतीय समाज के सर्वांगीण विकास, उसके आमूल परिवर्तन से राष्ट्रीय स्वाधीनता का प्रश्न जोड़ा गया है। वैज्ञानिक शिक्षा से भारत तभी लाभ उठा सकता है जब वह अपनी पुरानी समाज–व्यवस्था बदले, अपने अन्धविश्वासों और रूढ़ियों से स्वयं को मुक्त करे। जब तक भारतीय समाज में पुरानी वर्ण–व्यवस्था, जाति–विरादरी का भेदभाव, छूआछूत आदि कुरीतियाँ बनी हुई हैं, तब तक भारत प्रगतिशील आधुनिक राष्ट्र नहीं बन सकता। वैज्ञानिक शिक्षा राष्ट्रीय आवश्यकता है, समाज की व्यवस्था बदलना, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों को समाप्त करना यह भी राष्ट्रीय आवश्यकता है। यह राष्ट्रीय आवश्यकता क्यों नहीं पूरी होती ? पुरानी समाज–व्यवस्था में शीघ्रता से परिवर्तन क्यों नही होता? इसलिए कि जापानी देशभक्त हैं, हिन्दुस्तानी देशभक्त नहीं हैं।'' मूल समस्या राजनीतिक है। पहले देश को पहचानो, हृदय में देशभक्ति को जगह दो, राष्ट्रीय एकता कायम करो, स्वाधीनता प्राप्ति करो, तब आधुनिक राष्ट्र बनोगे, तब यूरोप के मुकाबले खड़े हो सकोगे।'' [6]

डॉ• रामविलास शर्मा ने हिन्दी नवजागरण को व्यापक अर्थों में लिया है। इसका अर्थ यह है कि नवजागरण दैनिक जीवन की मूलभूत समस्याओं के क्षेत्र में होना है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्वास्थ्य सुधार की आवश्यकता है। डॉ• शर्मा के संकेत की दृष्टि समस्त परिवर्तनों पर रही है। द्विवेदी जी ने भाषा संशोधन, साहित्यिक शैली के साथ जीवन की गहराई में जाकर अनेक समस्याओं का समाधन तथा सुधार, अपनी पत्रकारिता के माध्यम से करने का प्रयास किया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा नवजागरण तथा सुधार की प्रक्रिया में आर्थिक समस्या को गहराई से ग्रहण किया गया है। क्योंकि आर्थिक बिन्दु सबसे पहले तथा अधिकाधिक प्रभावित करता है। इसी कारण आचार्य द्विवेदी जी ने आर्थिक मामलों पर एक महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी पुस्तक की रचना की है, जिसका नाम है– संपत्तिशास्त्र। यह 'संपत्तिशास्त्र' आर्थिक विषयक ग्रन्थ है। इस महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी ग्रन्थ पर हिन्दी के अनेक विद्वानों तथा विचारकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। उन विचारों में से कुछ को यहाँ पर उद्धृत करना युक्तिसंगत प्रतीत होता है। 'संपत्तिशास्त्र' नामक ग्रन्थ पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नवल जी कहते हैं कि द्विवेदीजी अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध चलाए जानेवाले संघर्ष में किसानों के साथ थे। उन्होंने 'संपत्तिशास्त्र' में लिखा – ''प्रजा के हितचिंतकों की राय है कि इस देश की जमीन प्रजा की है। न राजा की है, न जमींदारों की। जो जमीन जिस काश्तकार के कब्जे में चली आती है, उसे उसकी मौरूसी जायदाद समझना चाहिए। किसानों को जमीन पर मौरूसी हक कैसे प्राप्त होता ? यह तभी संभव था जबकि अँग्रेजों द्वारा कायम की गई जमींदारी–प्रथा खत्म की जाती और विदेशी साम्राज्यवादियों ने देशी सामंतों से गठजोड़ करके किसानों को जो लूटना शुरू किया था, उसका सिलसिला बंद होता। ध्यान देने की बात यह है कि द्विवेदी जी जमींदारी–प्रथा के खात्मे की मांग कर वस्तुतः ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वह बुनियाद खोद डालना चाहते थे, जिस पर वह टिका था। इससे उनके विचारों की क्रांतिकारिता को समझा जा सकता है। भारतीय स्वाधीनता–आंदोलन के सुधारवादी नेता जहाँ सामंत–विरोधी किसान आंदोलन को स्वाधीनता–आंदोलन से अलग रखना चाहते थे, वहाँ द्विवेदीजी उसे उक्त आंदोलन की मुख्य शक्ति बनाना चाहते थे।'' [7]

उपर्युक्त विवेचन तथा विश्लेषण से स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि द्विवेदीजी हिंदी नवजागरण में हिन्दुस्तान की आर्थिक स्थिति को भी सुधारना चाहते थे। हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक डॉ• रामविलास शर्मा, आचार्य द्विवेदीजी रचित ग्रन्थ 'संपत्तिशास्त्र' के विषय में अपनी सहमति प्रकट करते हुए कहते हैं–''द्विवेदीजी ने अपने साहित्यिक जीवन के आरम्भ में पहला काम यह किया कि उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। उन्होंने जो पुस्तक बड़ी मेहनत से लिखी और जो आकार में उनकी और पुस्तकों से बड़ी है, वह 'संपत्तिशास्त्र' है। इसके अंश 1907 में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए और पूरी पुस्तक 1908 में प्रकाशित हुई। अभी तक हिन्दी में कोई ऐसा लेखक नहीं हुआ जो साहित्यकार हो, साथ–ही जिसे अर्थशास्त्र का ऐसा गहरा ज्ञान हो। यह ग्रन्थ अर्थशास्त्र की नयी–पुरानी पाठ्य–पुस्तकों से भिन्न है। इसका उद्देश्य है समकालीन भारत के अर्थतंत्र का अध्ययन

करना। इसका महत्त्व तब ज्ञात होगा जब इसे रजनी पाम दत की पुस्तक 'आज का भारत' के साथ मिलाकर पढ़ा जाएगा। पामदत्त की पुस्तक 1940 में प्रकाशित हुई। जो लोग भारत में अँग्रेजी राज की भूमिका समझना चाहते हैं, उनके लिए द्विवेदीजी की पुस्तक में महत्त्वपूर्ण सामग्री है। अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के कारण बहुत–से विषयों पर ऐसी टिप्पणियाँ लिख सके जो विशुद्ध साहित्य की सीमाएँ लाँघ जाती हैं। इसके साथ उन्होंने राजनीतिक विषयों का अध्ययन किया और संसार में जो महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाएँ हो रही थीं, उन पर उन्होंने लेख लिखे।'' [8] इस विचारोत्तेजक एवं गंभीर विश्लेषण का यही निष्कर्ष निकलता है कि आचार्य द्विवेदी जी के नवजागरण संदेश में 'संपत्तिशास्त्र' की एक महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि डॉ• रामविलास शर्मा जैसे शीर्षस्थ समीक्षक–विचारक व्यक्ति भी उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। डॉ• शर्मा का विचार विश्लेषण इस 'संपत्तिशास्त्र' नामक ग्रन्थ पर आगे भी जारी रहता है। ''संपत्तिशास्त्र के पाँचवें भाग का तीसरा अध्याय द्विवेदीजी ने केवल मालगुजारी पर लिखा। उन्होंने दिखाया किस तरह मालगुजारी बराबर बढ़ाई जाती रही है। मालगुजारी बढ़ाने की शिकायतें लंदन की पार्लियामेंट में सुनाई देने लगीं। हिन्दुस्तान में ही अनेक अंग्रेज अफसर किसानों की दरिद्रता पर खेद प्रकट करने लगे।'' [9] किसानों और मजदूरों की समस्या के प्रति आचार्य द्विवेदीजी की जागरूकता पर विचार करते हुए अपने आलेख 'सरस्वती के महावीर' में डॉ• रागिनी भूषण का कहना है–''द्विवेदीजी जहाँ किसानों की उन्नति की, मजदूरों के संगठन की तथा अनेक उद्योग– धंधे की बात करते हैं, वहाँ भारतीय समाज के वैशिष्ट्य को भी प्रदर्शित करते हैं। भारतीय समाज ने जहाँ दयानन्द सरस्वती, कणाद् आदि को महर्षि की उपाधि से विभूषित किया, वहाँ जीवन के प्रति प्रयोगात्मक दृष्टिकोण रखने वाले चार्वाक को भी महर्षि पद पर प्रतिष्ठित किया। द्विवेदीजी ने नीति और सदाचार को ही मानव धर्म का सारतत्त्व माना है। उन्होंने प्राचीन संस्कृति के पुनर्मूल्यांकन के लिए रूढ़िवादी विचारों से संघर्ष किया और यह संघर्ष उन्होंने रामावतार जैसे मित्रों के सहयोग से किया। उनके निबंध सरस्वती में प्रकाशित किए।'' इससे स्पष्ट हो जाता है कि द्विवेदीजी का नवजागरण संदेश जीवन से संबंधित संपूर्ण समस्याओं को लेकर है, राष्ट्र तो उनके सामने था ही। नवजागरण संदेश में आचार्य द्विवेदीजी रचित ग्रन्थ 'संपत्तिशास्त्र' का अद्भुत महत्त्व रहा है। डॉ• हरप्रकाश गौड़ 'संपत्तिशास्त्र' नामक पुस्तक पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं–''द्विवेदीजी उस युग के सचेत साहित्यकार थे। उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन अर्थशास्त्र की विस्तृत जानकारी के बाद शुरू किया। इस विषय पर 1908 में 'संपत्तिशास्त्र' नाम की पुस्तक भी लिखी। इस पुस्तक में उन्होंने यह दिखलाया है कि किसी देश की आर्थिक संपन्नता दो ही मुख्य स्त्रोतों पर अवलंबित होती है–कृषि की उन्नति और वाणिज्य–व्यापार का विकास। लेकिन हिन्दुस्तान में अधिक मालगुजारी वसूल करके और वाणिज्य व्यापार को बढ़ानेवाले उद्योग धंधे का गला घोंटकर, विकास के दोनों ही रास्ते अवरूद्ध कर दिए गए। अंग्रेजी सरकार मालगुजारी आए साल बढ़ाती ही जाती थी।'' [10]

द्विवेदीजी पूंजीवादी पद्धति से देश का विकास करना चाहते थे। इसलिए उन्हांने उद्योग– धंधे की स्थापना पर विशेष बल दिया। मशीनों की सहायता से कम कीमत में अधिक माल तैयार होता है। इसलिए उसकी कीमत भी कम रहती है। द्विवेदी जी ने 'संपत्तिशास्त्र' शीर्षक लेख में लिखा है–''जो चीजें यंत्रों की सहायता से तैयार की जाती है उनकी उत्पत्ति खर्च के हिसाब से अधिक होती है। अर्थात् उनकी तैयारी में बहुत कम खर्च पड़ता है। इससे उनकी कीमत कम होती है एक्योंकि उत्पत्ति खर्च जितना अधिक होता है, कीमत उतनी ही अधिक बढ़ती है। कल्पना कीजिए कि आपको ढाके की मलमल के एक थान की दरकार है। उसमें जो रूई लगती है उसकी कीमत बहुत होगी दो रूपये, अधिक नहीं, पर उसे हाथ से तैयार करने में बहुत मेहनत पड़ती है। इसी से उसकी कीमत ज्यादा देनी पड़ती है और उनका संग्रह तभी बढ़ सकता है, जब यंत्रों से काम लिया जाए। जितना ही बड़ा कारखाना होगा और जितना ही अधिक यंत्रों का उपयोग किया जाएगा उतना ही माल अधिक तैयार होगा और उतनी कम लागत भी लगेगी (सरस्वती, अप्रैल–1907)। द्विवेदीजी अच्छी तरह समझते थे कि भारत के आर्थिक विकास में अँग्रेज सरकार की कोई दिलचस्पी नहीं है। यदि भारत का औद्योगीकरण किया तो ब्रिटेन के उद्योग– धंधे तथा वाणिज्य–व्यापार की दुर्गति अवश्यम्भावी है, क्योंकि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जो ब्रिटिश कारखानों को कच्चा माल देता है और वहाँ से तैयार हुआ माल को अपने यहाँ लाता है। इसलिए द्विवेदीजी का विचार था कि भारतीयों को सरकार से भारत में उद्योग–धंधे स्थापित करने की आशा बिल्कुल नहीं करनी चाहिए।'' [11] आचार्य द्विवेदीजी ने हिन्दी पत्रकारिता तथा 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से आर्थिक नवजागरण के संदेश को भी जन–जन में संचारित किया है। नवजागरण संदेश में आचार्य द्विवेदीजी 'सरस्वती' के माध्यम से शिक्षा, विज्ञान तथा अर्थनीति सभी का प्रचार–प्रसार कर रहे थे– ऐसा ही डॉ• रागिनी भूषण का अपने आलेख 'सरस्वती के महावीर' में कहना है–''द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' में पदार्थ विज्ञान, परमाणुवाद, भूगर्भ विद्या आदि वैज्ञानिक विषयों पर निरन्तर लेख प्रकाशित करके अपने पाठकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार किया। सबसे अधिक लेख डार्विन और विकासवाद पर छपे, जिन्होंने दुनिया से अंधविश्वासों को जड़ से हिला दिया। द्विवेदीजी प्रकृति–पुरूष संबंध को विकास का मूल कारण मानते थे। प्रकृति के परिवर्तन कभी आगे की ओर ले जानेवाले, कभी पीछे की ले जानेवाले होते हैं। प्रकृति के निर्बल होने और मनुष्य के प्रबल होने को उत्क्रांति तथा विपरीत परिवर्तन को अपक्रांति कहा जाता है। इस प्रक्रिया का विश्लेषण हर्बर्ट स्पेंसर ने किया है।'' [12]

इस प्रकार देखा जाता है कि द्विवेदी जी ने अपने चिंतन को साहित्य तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि विज्ञान को भी जीवन के लिए आवश्यक समझकर पत्रकारिता के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टि से भी नवजागरण के लिए काम किया है। 'हिन्दी नवजागरण तथा महावीर प्रसाद द्विवेदीजी' शीर्षक आलेख में लेखिका आशा पुराणिक का कहना है–''यह अत्यन्त खेद का विषय है कि हिन्दी–नवजागरण में डॉ• रामविलास शर्मा का प्रशंसनीय कार्य छोड़कर अन्य कुछ भी सामग्री उपलब्ध नहीं है। मैंने 'सरस्वती' की पुरानी फाइलों को उल्टा–पुलटा तो पर्याप्त नई सामग्री उपलब्ध हुई, जो इतिहास की पुस्तकों में उपलब्ध नहीं है। अतः मुझे यह अनुभव होता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास का सर्वथा पुनर्लेखन किया जाए। यहाँ पर यथार्थवादी दृष्टिकोण से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि द्विवेदी–युग हिन्दी भाषा व साहित्य का पुनरूत्थान नहीं था, वरन् वह यथार्थ में हिन्दी का नवजागरण ही था। यह युग अपने पूर्ववर्ती भारतेन्दु युग से कुछ लेकर चला था तो परवर्ती छायावादी युग को कुछ देकर समाप्त हुआ था। द्विवेदी–युग का साहित्य केवल अभिजात्यवादी नहीं था, वरन् सर्वथा नवीन दृष्टि का द्रष्टा भी था।'' [13] इस कथन से भी पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि द्विवेदी–युग नवजागरण का संदेश लेकर आया था और द्विवेदी जी नवजागरण के संदेशवाहक थे। राष्ट्रीयता तथा देश प्रेम की भावना का नवजगारण करने के लिए 'सरस्वती' पत्रिका में 'वंदे मातरम्' गीत का प्रकाशन किया गया था, जिसका विवरण इस प्रकार है–''जनवरी 1906 की 'सरस्वती' में 'वंदेमातरम्' गीत को तीन भाषाओं– संस्कृत, हिन्दी तथा अँग्रेजी– में प्रकाशित किया गया है। यह गीत 'सरस्वती' के साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष का उद्देश्य है। इसी अंक में 'ईश्वर स्तुति' नाम से एक कविता छपी

है, जिसमें कवि ईश्वर से वह शक्ति देने की प्रार्थना करता है जो उसे स्वतंत्र भारत में प्राप्त थी– 'भारत को तू दे वह विक्रम । जिससे यह हो पुनः पूज्यतम ।।' स्वाधीनता की भावनाओं को उभारने वाली अँग्रेजी कविताओं के अनुवाद भी 'सरस्वती' में छापे गए हैं। इन कविताओं ने भारतवासियों में देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया।'' [14]

पराधीनता सबसे बडा कष्ट और संकट है। इस पराधीनता में, एक विवशता होती है, जिस विवशता के कारण कोई व्यक्ति स्वच्छंदतापूर्वक अपनी स्वतंत्र भावना के अनुसार कार्य नहीं कर सकता है। कार्य, परिश्रम तथा क्षमता उसका अपना होता है, परन्तु विवशता के अनुसार कार्य करने पर लाभ कर्त्ता को न मिलकर उसको मिला करता है, जिसकी पराधीनता में रहकर कोई काम करता है। भारत पराधीन रहा और अँग्रेज अपने स्वार्थ के अनुसार काम करवाते रहे। इसीलिए लाभ भारतवासियों को न मिलकर अँग्रेजों को मिलता रहा है। भारतवासी काम करते रहे, खटते रहे, मरते रहे, तड़पते रहे। नवजागरण संदेश में इसीलिए 'स्वतंत्रता और स्वाधीनता' का संदेश मुख्य था। फिर अँग्रेज भारत वर्ष की संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा तथा अध्यात्म विद्या पर भी कुठाराघात कर रहे थे, भारतीयता को भीतर ही भीतर नष्ट कर रहे थे। नष्ट करके भारतवासियों की भावना को कष्ट पहुँचा रहे थे। इस हालत में भी नवजागरण संदेश और नवजागरण अनिवार्य हो गया था। और इस अनिवार्य दायित्व को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके युग (द्विवेदी–युग) के रचनाकारों, कवियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, संपादकों तथा लेखकों आदि ने पूर्ण मनोयोग एवं दायित्व बोध के साथ पूरा किया है और आचार्य द्विवेदीजी को प्रत्यक्ष रूप से गुरु तथा पथ प्रदर्शक मान कर किया है। नवजागरण संदेश में भाषा–संशोधन, व्याकरण का अनुशासन, भाव–परिष्कार तथा परिमार्जन, विचार–आचार का परिवर्द्धन–सब कुछ पत्रकारिता में आचार्य द्विवेदीजी की प्रेरणा और उनके प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन से किया जाता रहा है।

संदर्भ सूची

1. 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' : पृ•सं•–9, संपादक – रामवृक्ष, प्रधान
2. संपादक–नामवर सिंह, प्रकाशक– नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. वही, पृ•सं•–9–10
4. वही, पृ•सं•–10
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ•सं•– 487, लेखक – डॉ• नगेन्द्र, प्रकाशक–मयूर पेपरबैक्स, नोएडा ;उ•प्र• ।
6. वही, पृ•सं•–488
7. महावीर प्रसाद द्विवेदी : भारतीय साहित्य निर्माता, पृ•सं•–43, लेखक–नंद किशोर नवल प्रकाशक – साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।
8. वही, पृ•सं•–50
9. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पृ•सं•–16,
10. लेखक–डॉ• रामविलास शर्मा। प्रकाशक – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. वही, पृ•सं•–24
12. आचार्य द्विवेदी ;साहित्य और पत्रकारिता के सरोकार, पृ•सं•–55, सम्पादक : डॉ•बी आर धर्मेन्द्र, प्रकाशक : इरावदी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली ।
13. सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण, पृ•सं•–23–24, लेखक – डॉ• हर प्रकाश गौड़, प्रकाशकः नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली ।
14. आचार्य द्विवेदी, पृ•सं•–56–57, सम्पादक – डॉ• बी आर धर्मेन्द्र, प्रकाशक– इरावदी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली –18 ।
15. वही, पृ•सं•–77
16. सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण, पृ•सं•–8, लेखक – डॉ• हर प्रकाश गौड़, प्रकाशक–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।